Part II H.O.W.
Paper. III

कौटिल्य अर्थशास्त्र की तिथि

श्यामाशास्त्री द्वारा कौटिल्य अर्थशास्त्र के सम्पादन तथा तिथि निर्धारण के बाद विद्वानों में कुछ प्रतिक्रियाएँ हुयीं जिनके फलस्वरूप प्रो० जौलिंग प्रो० विन्टरनीज, आदि लेखकों ने यह साबित करने का प्रयास किया है कि अर्थशास्त्र ईसा की 4थी शदी का ग्रंथ है। उनके विचार निम्नांकित हैं साक्ष्यों पर आधारित हैं —

(1) मेगास्थनीज के इन्डिका में कौटिल्य अर्थशास्त्र का कोई जिक्र नहीं आया है।

(2) पाँतजलि के महाभाष्य में भी कौटिल्य अर्थशास्त्र का कहीं भी वर्णन नहीं आया है।

(3) कौटिल्य अर्थशास्त्र में जिस समाज और अर्थव्यवस्था का वर्णन है वह समाज बड़ा ही उन्नत है।

(4) कामनन्दक नीतिसार और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में बहुत ही समानता है।

(5) अर्थशास्त्र में कौटिल्य का जहाँ भी वर्णन आया है उसे हम अन्य पुरुष की परिभाषा में पाते हैं। इसलिए कौटिल्य अर्थशास्त्र की तिथि मौरियों के बाद की तिथि होनी चाहिए।

6) अर्थशास्त्र में सुरंग शब्द का प्रयोग हुआ है। सुरंग यवन भाषा के Syrinx शब्द पर आधारित है। चूंकि यवन मौरियों के बाद आये इसलिए अर्थशास्त्र की तिथि यवनों के बाद की तिथि होनी ~~चाहिए~~।

(7) अर्थशास्त्र में केमिकल्स एडमान्स मेटरलिजी का जिक्र है। एडमान्स केमेस्ट्री या मेटरलिजी बाद की चीज है। अतः कौटिल्य अर्थशास्त्र की तिथि मौरियों के बाद की होनी चाहिए।

उपरोक्त तर्कों को हम अगर एक-एक कर जाँचते हैं तो लगता है कि तर्क तथ्यविहीन है। उसके पहले तर्क के विरोध में यह कहा जा सकता है कि इन्डिका ओपेन complit form में नहीं मिल पायी है। इसके जो भी फैलिग्मन्स (प्रमाण) मैं वे सारे खंडित हैं। खंडित ग्रंथ के आधार पर

कह देना कि कौटिल्य या उसके अर्थशास्त्र का इसमें कोई जिक्र नहीं है। न्यायोचित नहीं जपँता। हो सकता है कि इण्डिका इंडिका के विरक्त भाग में कौटिल्य या उसके अर्थशास्त्र का जिक्र हो। अतः स्थिति संदेहात्मका है।

(2) महाभाष्य में अर्थशास्त्र का कोई साक्ष्य नहीं है लेकिन पातंजलि ने मुद्रा के रूप में दिनार शब्द का प्रयोग किया है। दिनार बैक्ट्रियन के साथ भारत आये इसके पूर्व भारतीय सिक्के, निष्क, कार्षापण, पण-पद एवं मासा शब्द का प्रयोग सिक्कों के लिए किया है। इन्हीं सिक्कों का जिक्र अर्थशास्त्र में आया है। अतः लगता है कि अर्थशास्त्र के के युग में पाणिनी द्वारा बताये गये सिक्के प्रचलित थे। पाणिनी पातंजलि के पूर्व के लेखक हैं। अतः कौटिल्य को भी पातंजलि के पूर्व ही मानना चाहिए।

3) D.D. Koshambi के अनुसार सामाजिक जीवन तथा ~~अर्थव्य~~ अर्थव्यवस्था पर जो नियंत्रण मौर्य युग में था वह अन्य युगों में कभी भी नहीं हुआ। इसलिए अर्थशास्त्र को मौर्यकाल का ही ग्रंथ मानना चाहिए।

(4) कामनन्दक नीतिसार और कौटिल्य के व्यक्तव्यो में समानता अवश्य है किन्तु कामनन्दक ने कौटिल्य को अपना गुरु स्वीकारा है। अतः गुरु को शिष्य की तिथि से पूर्व का होना चाहिए। कामनन्दक अपने ग्रंथ को अर्थशास्त्र का सार बतलाते हैं जब अर्थशास्त्र पहले नहीं था तो उसका सार कामनन्दक के काल में कैसे निकाला गया। अतः अर्थशास्त्र कामनन्दक नीतिसार के पूर्व का ग्रंथ है।

5) चीन और चरिशमी को मौर्यकाल में अज्ञात बताया गया है। कुछ विद्वानों ने चीन का समीकरण गिलगिट स्थित सिन जाति से किया है। सिन जाति के लोग सहतूत के

पेड़ लगाते थे और रेशमी वस्त्र कपड़े तैयार करते थे। अगर इस समीकरण को सत्य मान लिया जाय तो सारा उलझन ही समाप्त हो जाता है। अर्थशास्त्र में कहा गया है कि चीन देश में जो रेशमी वस्त्र बनते हैं वे कौशेय और चीन पट कहलाते हैं। न तो कौशेय ही और न पट ही चीनी भाषा के शब्द हैं। जिस वर्ग में चीन का उल्लेख है। उस वर्ग की और सब जातियां हिमालय प्रदेश की ही हैं। अतः अर्थशास्त्र का चिह्न भारत स्थित क्षेत्र ही कोई रहा होगा। जहां रेशमी वस्त्र बनते होंगे और उनका प्रयोग मौर्य काल में होता होगा।

(6) अर्थशास्त्र में सुरंग का प्रयोग अजीब सा लगता है। सुरंग syrinx का विकृत रूप है जो कि मूल रूप में ग्रीक शब्द है। ग्रीक शब्द का विशुद्ध संस्कृत अर्थ में प्रयोग हमें अजीबोगरीब स्थिति में डाल देता है। लेकिन संस्कृत साहित्य इन्टरपोलेसन (घुसपैठ) से भरे पड़े हैं। ग्रंथ के पाठ से जब पाठक अपने मन की चीज ग्रंथ में जोड़ देता है रामायण महाभारत आदि-आदि ग्रंथ इसतरह के इन्टरपोलेसन से भरे पड़े है। इसलिए सम्भावनाएं हैं कि सुरंग शब्द को लोगों ने original Text में घुसाया। अतः भारतीय पाठकों की आदत को ध्यान में रखते हुए अर्थशास्त्र की तिथि पर ध्यान देना होगा।

(7) केमिकल्स एवं एडमान्स मेटलर्जी का प्रश्न है हम दावे के साथ कह सकते हैं कि इनका अध्ययन भारतीय कांस युग में ही प्रारम्भ हो गया था। भारतीय कांसयुग और मौर्ययुग में हजारों साल का अंतराल है। इस हजारों साल में अध्ययन अवश्य ही एडमान्स मेटलर्जी के Information है तो कोई अजूबा नहीं है

Prof. R.S Sharma ने हाल के दिनों में

हाल के दिनों में Prof. R.S. Sharma ने अर्थशास्त्र की तिथि को लेकर निम्नांकित मत व्यक्त किये हैं।

कौटिल्य प्रशासन

(1) कौटिल्य द्वारा वर्णित राजनैतिक रूप रेखा अशोक के अभिलेखों में वर्णित अवस्था से भिन्न है।

कौटिल्य केन्द्रीकरण

2 — कौटिल्य केन्द्रीकरण पर बल देता है परन्तु अशोक विकेन्द्रीकरण।

महामात्र, राजुक, प्रतिवेदक, प्रादेशिक आदि का उल्लेख अशोक के अभिलेखों में

3 — अशोक के अभिलेखों में महामात्र, राजुक, प्रादेशिक, प्रतिवेदक आदि का उल्लेख है। परन्तु कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इनका उल्लेख नहीं मिलता। मात्र महामात्र का उल्लेख एक बार हुआ है। अशोक के अभिलेख में युक्त का उल्लेख कौटिल्य से मिलता है।

भोग, प्रणय, विष्टि, परिहार आदि शब्दों का व्यवहार

4 — भोग, प्रणय विष्टि, परिहार आदि शब्दों का व्यवहार अर्थशास्त्र में हुआ है। इन शब्दों का व्यवहार अभिलेख में 100 से 300 ई० में मिलता है।

5 — अमात्य शब्द का जो महत्व शक सातवाहन अभिलेखों में है वही महत्व अर्थशास्त्र में भी है। इन सभी तथ्यों के आधार पर प्रो० शर्मा की राय है कि ग्रंथ की रचना मौर्य काल में हुयी होगी लेकिन संकलन ई० सन् 100 के आसपास। जबकि संकलनकर्ता ने अपने समय की बाद जुड़ी होगी।

D.D. Koshambi

Prof. D.D. Koshambi अर्थशास्त्र और इण्डिका को एक दूसरे का पूरक मानते हैं। हम कौटिल्य और मेगास्थनीज की कई बातों पर समानता पाते हैं। मेगास्थनीज ने सिंचाई और पैमाइश का उल्लेख किया है। अर्थशास्त्र में सिंचाई, समाहर्ता के कर्त्तव्यों में एक बतायी गयी है। मेगास्थनीज ने नदियों पर निगरानी रखने वाले कर्मचारी कर्मचारियों का उल्लेख किया है। और कौटिल्य ने नदीपाल का उल्लेख किया है